खोरठा साहित्यकार बी. एन. ओहदार का जीवन और साहित्य : एक अध्ययन

पीएच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध–प्रारूप
स्नातकोत्तर खोरठा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची
संकाय : जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा
वर्ष : 2024

<u>**शोध निर्देशक**</u>

डॉ0 अरविन्द कुमार
विभागाध्यक्ष
खोरठा विभाग
डोरण्डा कॉलेज, राँची
राँची विश्वविद्यालय. राँची

<u>**शोधार्थी**</u>

अगस्त कुमार

यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

प्रस्तावना

झारखंड एक बहुप्रजातीय, बहुभाषिक एवं बहु–सांस्कृतिक राज्य है। अर्थात् यहाँ तीन प्रजाति प्रोटो ऑस्ट्रोलॉयड प्रजाति, द्रविड प्रजाति और आर्य प्रजाति पाए जाते हैं। प्रोटोऑस्ट्रोलॉयड के अंतर्गत मुख्य रूप से मुंडा, संथाल, हो एवं खड़िया जनजाति आती हैं और उनकी भाषा संस्कृति क्रमशः मुंडारी, संथाली, हो और खड़िया है। द्रविड़ प्रजाति के अंतर्गत मुख्य रूप से उरांव एवं सौरिया पहाडिया जनजाति आती हैं तथा उनकी भाषा एंव संस्कृति क्रमशः कुडूख और माल्टो हैं। आर्य प्रजाति के अंतर्गत आने वाली जातियों को सदान कहा जाता है, सदान झारखंड के वैसे गैर जनजाति समुदाय हैं, जिनका झारखंड में होने एवं रहने का इतिहास हजारों वर्ष पुराना है और इनका झारखंड के निर्माण में महती योगदान रहा है। सदानों की भाषा संस्कृति को सदानी भाषा कहा जाता है।

उपर्युक्त तीनों प्रजातियां हजारों वर्ष से कमोवेश समय सापेक्ष उतार–चढ़ाव के साथ आजू–बाजू रहकर गंगा यमुना संस्कृति का विकास किया है जिसे हम झारखंडी भाषा संस्कृति के नाम से जानते हैं। इस दृष्टि से झारखंड एक विलक्षण गुणों से युक्त राज्य है और इसे प्रकारांतर से भारत का लघु प्रतिरूप माना जा सकता है।

सदानों की भाषा को सदानी कहा जाता है और यह चार भाषाओं का गुच्छ है जिसे हम क्रमशः खोरठा कुरमाली नागपुरी तथा पंचपरगनिया के नाम से जानते हैं संप्रति हमारा अभीष्ट खोरठा भाषा साहित्य एवं उनके साहित्यकार से संबंधित है।

खोरठा भाषा झारखंड के सर्वाधिक बडी क्षेत्र एवं सर्वाधिक जनसंख्या की लोकप्रिय भाषा है। यह झारखंड के तीन प्रमंडलो उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल, पलामू प्रमंडल तथा संथाल परगना के सभी जिलों जैसे कि रामगढ़, हजारीबाग बोकारो, धनबाद, गिरिडीह, कोडरमा, चतरा, लातेहार, पलामू, गढ़वा, दुमका, देवघर, जामताड़ा, गोड्डा, साहिबगंज और पाकुड़ कल 16 जिले खोरठा भाषा क्षेत्र निर्मित करते हैं। मारखम कॉलेज हजारीबाग के पूर्व प्रधानाचार्य शिवदयाल सिंह ने खोरठा भाषा का क्षेत्र 31 हजार वर्ग मील बताया है 2001 एवं 2011 की जनगणना में क्रमशः 49 लाख एवं 8.5 मिलियन लोगों ने खोरठा को अपनी मातृभाषा के रूप में दर्ज कराया है।

वस्तुतः खोरठा भाषी लोगों की संख्या झारखंड की कुल जनसंख्या 3,29,88,134 में से लगभग 2 करोड़ लोगों के दैनदिन के जीवन में प्रयोग होने वाला

लोकप्रिय भाषा है। इसके अतिरिक्त खोरठा भाषा उत्तरी झारखंड के जनजातीय समुदायों विशेषतः संथाल समुदाय के बीच संपर्क भाषा का काम करती है तथा संथालों को शेष दुनिया से खोरठा भाषा ही जोड़ती है। उल्लेखनीय है कि संथालो को छोड़कर उत्तरी झारखंड में मुंडा, उरांव, लोहरा आदि सभी जनजातियों की भी मातृभाषा खोरठा ही है क्योंकि ये अपनी जातिगत मातृ भाषाओं को भूल चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि खोरठा क्षेत्र के मुस्लिम समुदाय की भी मातृभाषा खोरठा है, किंतु अज्ञानता एवं धार्मिक कारणों से ये अपनी मातृभाषा के रूप में उर्दू दर्ज कराते रहे हैं।

समाज के विकास के साथ भाषा संस्कृति का विकास होता रहता है और भाषा संस्कृति के विकास में साहित्यकारों एवं कलाकारों का महति योगदान रहता है।

खोरठा भाषा शिष्ट साहित्य की परंपरा 300 साल से भी ज्यादा मानी गई है। 1700 ईस्वी में रामगढ़ राज की पांचवी पीढ़ी के राजा दलेल सिंह उर्फ दलशाह ने शिवसागर नामक महाकाव्य की रचना की है जो लगभग 700 पृष्टों की है, जिसकी पांडुलिपि वर्तमान में राय बहादुर संग्रहालय यूपी में संग्रहित है। इसके अतिरिक्त गोविंद लीलामृत, रामरसार्णव आदि खंडकाव्य की भी रचना इनके द्वारा हुई है। इसके अतिरिक्त इसी कालखंड में दलशाह के पुत्र रूद्र सिंह एवं राजगुरु पद्म दास की कुछ रचनाओं की सूचना मिलती है। इस कालखंड की सभी रचनाएं भगवान भक्ति विषयक रही है।

लॉड कॉर्नवालिस द्वारा 1793 में किए गए स्थाई भूमि प्रबंध के साथ ही खोरठांचल की सामाजिक ढॉचा बदलता है। समाज में एक सामंतवाद का उदय होता है और उसके साथ ही एक नये साहित्यिक युग की शुरूआत होती है, जिसकी साहित्यिक प्रकृति मुख्य रूप से श्रृंगार विषयक रही है और इस समय कीसारी रचनाएं गीत विद्या में पाई गई है। इस कालखंड के मुख्य रचनाकारों में गंगूराम, हांडी राम, चामू कमार, रटुवा गोड़ाइत, भावप्रीता, विनंद सिंह आदि के नाम उल्लेखनीय है। भारत देश की आजादी के साथ खोरठा साहित्य के आधुनिक काल की शुरुआत होती है। इस काल के प्रमुख साहित्यकारों में **भुवनेश्वर दत्त शर्मा, श्रीनिवास पानुरी, ए. के झा, शिवनाथ प्रमाणिक, विश्वनाथ नागर, विश्वनाथ दशौंधी राज, शांति भारत, वंशी लाल वशी, सुकुमार, जनार्दन गोस्वामी,**

इत्यादि का नाम आता है। खोरठा साहित्य आधुनिक काल के इन्हीं साहित्यकारों की पंक्ति में **डॉ बी0 एन0 ओहदार** का नाम बहुत ही आदर से लिया जाता है।

खोरठा भाषा एवं साहित्य के विकास में सड़क से अकादमी स्तर तक स्थापित करने में इनकी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जब झारखंड में झारखंडी भाषाओं को स्थापित करने के लिए आंदोलन चल रहे थे, तब भाषा साहित्य के आंदोलन में एक प्रमुख आंदोलनकर्मी **ए.के झा जी** के साथ खोरठा भाषा क्षेत्र में खेत खलियान गांव से लेकर विश्वविद्यालय तक आंदोलन चलाया। लगभग आधा दर्जन भाषा साहित्य सम्मेलनों का आयोजन किया। खोरठा के विकास के लिए **रामगढ़ में ''खोरठा ढॉकी क्षेत्र कमेटी भाषा साहित्य संस्था'' का गठन** किया। इसके तहत खोरठा के प्रमुख पत्रिका तितकी का पुनः प्रकाशन ए.के झा जी के साथ आरंभ किया। चूँकि यह पत्रिका 1977 में विश्वनाथ दशौंधी के संपादन में कुछ अंकों के प्रकाशन के बाद बंद हो गई थी। इसके अतिरिक्त भाषा साहित्य संस्कृति विषयक अनेको लेख लिखे, जो राज्य के विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में समय–समय पर प्रकाशित होते रहे हैं। स्नातकोत्तर जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग की स्थापना के बाद खोरठा विषय के प्रथम छात्र के रूप में अपना नामांकन कराया। उल्लेखनीय है कि ये विधिवत डिग्री प्राप्त एवं स्थापित चिकित्सक थे और रामगढ़ में इनका अच्छा खासा क्लिनिक भी था किंतु भाषा साहित्य एवं संस्कृति के प्रति अतिशय लगाव के कारण क्लीनिक को बंद कर भाषा साहित्य आंदोलन में ए० के० झा जी के साथ सक्रिय हो गए। खोरठा भाषा में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त करने के बाद ये उसी विभाग में लगातार 31 सालों तक निर्वाध रूप से अवैतनिक सेवा देते रहे हैं। दुखद बात यह है कि स्नातकोत्तर जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची में खोरठा में स्नातकोत्तर शिक्षा के लिए मान्यता तो दी गई किन्तु पद सृजन का कार्य 30 वर्षों तक नहीं हो पाया। विकट परिस्थिति में जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग में इन्होंने अध्यापन का बीड़ा उठाया यदि इन्होंने अध्यापन कार्य की जिम्मेवारी नहीं ली होती तो निश्चय ही शिक्षक के अभाव में खोरठा अध्ययन–अध्यापन आगे नहीं हो पता। ऐसा इसलिए कहा जा सकता है कि खोरठा को एक स्वतंत्र भाषा के रूप में मान्यता देने के पक्ष में तत्कालीन विद्वान नहीं थे और खोरठा भाषा की अकादमिक मृत्यु अपने शशैव काल में ही हो जाती। आज खोरठा भाषा झारखंड में एक समृद्ध भाषा के रूप में उभर कर आई है। इसमें **बी0 एन0 ओहदार** का बड़ा योगदान रहा है।

इस दरम्यान इन्होंने खोरठा साहित्य अकादमी, रामगढ़ एवं खोरठा साहित्य परिषद, रामगढ़ की स्थापना की। इन संस्थाओं का खोरठा भाषा साहित्य के विकास एवं समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। विगत कई सालों से ये खोरठा साहित्य परिषद के निर्देशक हैं जिनके तहत प्रत्येक वर्ष खोरठा साहित्य के पूरोधा श्रीनिवास पानुरी की जयंती पर बड़े–बड़े साहित्यिक आयोजन किए जा रहे हैं।

इस दरम्यान इन्होंने 'खोरठा भाषा उद्‌भव एवं विकास' नामक पुस्तक की रचना की जिसका अब तक चार संस्करण आ चुका है। इनके 16 निबंधों का संकलन 'खोरठा निबंध' नामक पुस्तक 1990 में जनजातीय भाषा अकादमी के द्वारा प्रकाशित हुई। उल्लेखनीय है कि ये एक लंबे समय तक जनजातीय भाषा अकादमी के सदस्य भी रहे हैं तथा पाठ्य पुस्तक के संपादक मंडल में सदस्य रहे हैं। इन्होंने बहादुर शाह जफर एवं दुष्यंत कुमार के गजलो का खोरठा अनुवाद किया जो 2007 में प्रकाशित हुई है। इनके आधे दर्जन के आसपास पुस्तक साहित्य के विभिन्न विधाओं में प्रकाशन के लिए तैयार है, किंतु वित्त के अभाव में लंबित है। इन्होंने झारखंड संदेश, तितकी, करील जैसे खोरठा के अग्रनी पत्रिकाओं का संपादन किया है एवं तीन दर्जन के लगभग भाषा संस्कृति बिषयक आलेख विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित किया है। इतना ही नहीं समय निकालकर 1989 से लेकर अब तक जंगल बचाव आंदोलन चलाते रहे हैं और रामगढ, बोकारो, हजारीबाग जिले के 300 गांव में वन बचाव समितियों का गठन किया है और इस समिति के महासचिव पद पर रहते हुए हजारों एकड़ वन विहिन हुए वन भूमि को फिर से हरा–भरा किया है। ऐसे व्यक्ति की व्यक्तित्व तो एवं कृतित्व पर कोई काम नहीं हुआ है।

<u>शोध की प्रेरणा</u>

स्नातकोत्तर विभाग में अध्ययन के दौरान मुझे डॉ0 बी0एन0 ओहदार की रचनाओं एवं रचना धार्मिता का परिचय प्राप्त हुआ। इनकी रचनाएं गंभीर अध्ययन के परिचायक हैं। इनकी रचनाओं में झारखंडी अस्मिता एवं माटी के सोंधेपन की महक पाई जाती हैं। कई स्तरों में कई साहित्यिक सभाओं में अक्सर मिलने–जुलने का अवसर प्राप्त हुआ और इनके व्यक्तित्व एवं रचनाओं से प्रभावित होकर इनके व्यक्तित्व के अनछुए पहलू और इनकी रचनाओं की विशेषताओं को समाज एवं अकादमिक स्तर पर लाने की योजना बनाई ताकि परवर्ती अध्येताओं एवं शोधकर्ताओं को सुलभ शोध सामग्री उपलब्ध हो सके। साथ ही मेरे गुरुजनों ने भी सहमति प्रदान की।

शोध विधि

प्रस्तावित शोध अध्ययन के लिए निम्नलिखित शोध विधियों का अनुशरण किया जाएगा।

1. साक्षात्कार विधि
2. अवलोकन विधि
3. तुलनात्मक विधि
4. प्रश्नावली विधि
5. विश्लेषणात्मक विधि

शोध का उद्देश्य

इस शोध को पूरा करने से निम्नलिखित उद्देश्यों की सिद्ध होने की संभावना है।

1. खोरठा साहित्य का महत्व तथा उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। इसके संकलन, संचयन, प्रकाशन और मूल्यांकन की दिशाएं प्रशस्त होगी।
2. खोरठा भाषा साहित्य संस्कृति, इतिहास, सांस्कृतिक धरोहर जनजीवन का परिज्ञान होगा। साथ ही साथ आम लोगों में जन चेतना का संचार होगा।
3. खोरठा भाषा के छात्रों को अपने साहित्य के जीवन संघर्षों एवं रचना धर्मिता से संबंधित एक अध्ययन सामग्री प्राप्त होगा।
4. खोरठा भाषा के साहित्यकार डॉ0 बी.एन. ओहदार के जीवन और उनके बहुविद कृतित्व पर प्रकाश पड़ेगा।
5. खोरठा भाषा साहित्य के उद्भव एवं विकास की भी जानकारी प्राप्त होगी।
6. उत्तरी झारखंड में रहने वाले लोगों के जीवन दर्शन एवं मनोवृति का पता चलेगा।

साथ ही इस क्षेत्र में रहने वाली सदान एवं आदिवासी के परंपरागत भाईचारा का भी ज्ञान होगा।

शोध का समाज में प्रभाव :–

प्रस्तुत शोध को पूरा करने एवं प्रकाशित होने पर समाज पर इसका क्रांतिकारी प्रभाव पड़ेगा।

1. डॉ0 बी. एन. ओहदार के जीवन और साहित्य के प्रकाश में आने पर समस्त खोरठा भाषा– भाषियों में साहित्य के प्रति सम्मान और जागृति की लहर आएगी।
2. खोरठा समाज के साथ सभी भाषा समाज के दिग्गज साहित्यकारों के जीवन और साहित्य को प्रकाश में लाने के लिए भावी पीढ़ी का मनोबल बढ़ेगा।
3. व्यक्तिगत कार्यों के गुण–गरिमा के कारण सामाजिक कार्यों का विस्तार होगा।
4. समाज में साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक कार्य एवं संस्कृति के प्रति समादर और निष्ठा का विकास होगा।
5. शोध के प्रकाश में आने पर झारखंड ही नहीं बल्कि पूरे राष्ट्र की क्षेत्रीय भाषाओं के यशस्वी रचनाकारों के योगदानों को प्रकाश में लाने की प्रेरणा आम जन तक व्याप्त होगी।

उपकरण :–

प्रस्तुत शोध विषय में निम्नांकित सामग्री शोध कार्य के लिए उपयुक्त किये जा सकते हैं।

1. पुस्तकें– डॉ0 बी0एन0 ओहदार लिखित पुस्तकें, प्रकाशित रचनाएं, संदर्भ ग्रंथों, पत्र–पत्रिकाएं एवं पांडुलिपियों।
2. टेप रिकॉर्डर–साक्षात्कार आदि के लिए।
3. कैमरा–आवश्यक चित्र को चित्रित करने के लिए।
4. दूरभाष या चलभाष संबंधित व्यक्तियों से संपर्क कर सूचना संकलन हेतु।
5. कंप्यूटर, लैपटॉप, प्रिंटर।
6. वेबसाइट।

अध्यायीकरण :–

खोरठा साहित्यकार बी. एन. ओहदार का जीवन और साहित्य : एक अध्ययन

- प्रस्तावना।
- शोध की प्रेरणा।
- शोध का उद्देश्य।
- शोध का समाज में प्रभाव।

प्रथम अध्याय :–खोरठा भाषा एवं साहित्य का सामान्य इतिहास

1.1 खोरठा भाषा का सामान्य परिचय।

1.2 खोरठा में साहित्य लेखन की परंपरा।

द्वितीय अध्याय :– जीवन रेखाएँ एवं व्यक्तित्व

2.1 जन्म एवं परिवार

2.2 पारिवारिक स्थिति

2.3 बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था एवं प्रौढ़ावस्था

2.4 शिक्षा

2.5 विवाह

2.6 विविध कार्य :–

2.6.1 सामाजिक क्षेत्र में

2.6.2 सांस्कृतिक क्षेत्र में

2.6.3 शिक्षा के क्षेत्र में

2.6.4 चिकित्सा के क्षेत्र में

2.6.5 भाषा संस्कृति के क्षेत्र में

2.6.6 राजनैतिक क्षेत्र में

2.6.7 पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में

<u>तृतीय अध्याय</u> :– बी0 एन0 ओहदार की समकालीन परिस्थितियाँ

3.1 सामाजिक एवं सांस्कृतिक

3.2 राजनीतिक

3.3 धार्मिक

3.4 आर्थिक

3.5 भाषिक एवं साहित्यिक

<u>चतुर्थ अध्याय</u> :– बी0 एन0 ओहदार का गद्य साहित्य

4.1 प्रकाशित

4.2 अप्रकाशित

<u>पंचम अध्याय</u> :– बी0 एन0 ओहदार का पद्य साहित्य

5.1 प्रकाशित

5.2 अप्रकाशित

5.3 अनूदित काव्य

<u>षष्ठ अध्याय</u> :– कृतियों का साहित्यिक मूल्यांकन

6.1 भाव

6.1.1 भावगत मूल्य

6.1.2 रसगत मूल्य

6.2 कलागत मूल्य

6.2.1 भाषा

6.2.2 शैली

6.2.3 छंद

6.2.4 अलंकार

<u>सप्तम अध्याय</u> :– बी0 एन0 ओहदार का सम्पादक के रूप में योगदान

- **उपसंहार**
- **परिशिष्ट**
- **संदर्भ ग्रंथ सूची**
- **क्षेत्रीय कार्य**

नोटः आवश्यकता अनुसार शोध प्रारूप में आंशिक परिवर्तन किये जा सकते हैं।

शोध निर्देशक

डॉ0 अरविन्द कुमार
विभागाध्यक्ष
खोरठा विभाग
डोरण्डा कॉलेज, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

अगस्त कुमार
यू.जी.सी. नेट/जे.आर.एफ
जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा संकाय
राँची विश्वविद्यालय, राँची।

आधार ग्रंथ सूची

1. ओहदार, डॉ.बी.एन., खोरठा भाषा एवं साहित्य उद्‌भव एवं विकास, खोरठा भाषा साहित्य–संस्कृति अकादमी, रामगढ़, 2007
2. ओहदार, रामटहल, मइलाइल हवा, सोसाइटी फॉर हिल एरिया डेवलपमेंट, मुद्रक भुरकुण्डा प्रिंटिंग प्रेस, भुरकुंडा
3. ओहदार, बी.एन., खोरठा निबंध, जनजातीय भाषा अकादमी, बिहार सरकार, रांची, 1990
4. ए0के0 झा : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, शोध प्रबंध, अप्रकाशित, 2018
5. कुमारी, डॉ. समरिता, शारदा प्रसाद शर्मा, व्यक्तित्व एवं कृतित्व, के.के. पब्लिकेशनस इलाहाबाद, 2013
6. केशरी डॉ. सविता– नागपुरी कवि कंचन जीवन एवं साहित्य, नागपुरी संस्थान, पठोरिया, राँची
7. गौंझू, डॉ. गिरिधारी राम, पीटरशांति नवरंगी, व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पझरा प्रकाशन, नागपुरी प्रचारिणी सभा, राँची, 1990
8. दुबे डॉ. विश्वनाथ– धनीराम बक्शी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, शोध प्रबंध, अप्रकाशित 1981
9. साहित्यकार विश्वनाथ दसौंधी राज : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, शोध प्रबंध, अप्रकाशित, 2018
10. साहू, डॉ. गोविन्द– नागपुरी क व घासी रामः व्यक्तित्व एवं कृतित्व, शोध प्रबंध, अप्रका शत 1976
11. साहु, डॉ. सुखदेव– डॉ. भुवनेश्वर अनुज : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, शोध प्रबंध, अप्रकाशित, 2003
12. श्रीनिवास पानुरी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, 2012

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. 'आला', कृष्ण चन्द्र दास, खोरठा भाषा गर्हन, आला प्रकाशन, पुष्पा प्रेस, चास, बोकारो, 1997
2. 'आला', कृष्ण चन्द्र दास, सईतल साड़ा, आला प्रकाशन, पुष्पा प्रेस, चास, बोकारो, 1997
3. ओहदार, रामटहल, मइलाइल हवा, सोसाइटी फॉर हिल एरिया डेवलपमेंट, मुद्रक भुरकुण्डा प्रिंटिंग प्रेस, भुरकुंडा
4. ओहदार, बी.एन., खोरठा निबंध, जनजातीय भाषा अकादमी, बिहार सरकार, रांची, 1990
5. ओहदार, बी.एन., खोरठा भाषा एवं साहित्य उद्भव एवं विकास, खोरठा भाषा साहित्य अकादमी, रामगढ़, 2007
6. ओहदार, बी.एन., अनुदितांजली, बहादुर साह जफर एवं दुष्यंत कुमार के जगलो का अनुवाद, 2006
7. करमाली, फुतेश्वर, खोरठा कविता संग्रह, सहाय प्रिंटर्स बिजुलिया, रामगढ़ कैंट, 2004
8. कुमार, डॉ. विनोद, सोंधमाटी, जनजातीय भाषा अकादमी, बिहार सरकार, राँची, 1990
9. 'गणपति', धनपत महतो, कादो फूल, खोरठा ढाकी छेतर कमिटि, कोठार, रामगढ़, 1986
10. गरीब, शिवनंदन पांडेय, खोरठा लोकगीत, बोकारो खोरठा कमिटि, बोकारो, 1994
11. गदर, इम्तियाज, पारसनाथ, सनी प्रकाशन, धनबाद
12. गोस्वामी, मनपूरन, परासचित, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह, बोकारो, 2006
13. 'चित्रा' चितरंजन महतो, जिनगीह टोह, खोरठा, ढांकी छेतर कमिटी,

कोठार, रामगढ़, 1986

14. 'चित्रा' चितरंजन महतो, छांहइर, खोरठा भाषा साहित्य–संस्कृति अकादमी, रामगढ़, 2000

15. झा, ए.के., खोरठा गइद–पइद संगरह, बोकारो खोरठा कमिटी, बोकारो इस्पात नगर, 1989

16. झा., ए.के., खोरठा साहित सदानिक व्याकरण, झारखण्ड झरोखा, रातु रोड, राँची

17. प्रमाणिक, शिवनाथ, दामोदरेक कोरांञ, खोरठा साहित्य संस्कृति परिषद्, भभुआ, बोकारो, 1986

18. प्रमाणिक, शिवनाथ, रूसल पुटुस, बोकारो खोरठा कमिटी, बोकारो इस्पात नगर

19. पानुरी, श्रीनिवास, चाभी काठी, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह बोकारो, झारखण्ड, (2006 में पुनःर्मुद्रित)

20. महतो, वासुदेव, खोरठा व्याकरण कर एक खेमचा, रॉयल प्रकाशन, सेवासदन पथ, राँची

21. महतो, श्याम सुंदर, तोंय आर हाम, बोकारो खोरठा कमिटि, 1997

22. महतो, संतोष कुमार, एक मउनी फूल, रामधन प्रकाशन, गांगजोरी, बोकारो, 1988

23. महतो, श्याम सुंदर, मुक्तिक डहर, शक्तिग्राम विकास संघ, आजाद सिजुआ, भेलाटांड, 1995

24. महतो, पंचम, फरीछ डहर, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह, बोकारो, 2001

25. महतो, घनश्याम, झींगा फूल, सहिया मिलन चिरूडीह, नवाडीह, बोकारो, 2000

26. सुकुमार, बावाँ हाथेक रतन, अखिल झारखण्ड खोरठा परिषद्, भेंडरा, बोकारो, 2009

27. सुकुमार, पइनसोखा, खोरठा भाषा विकास समिति भेण्डरा, गोमो, बोकारो, 1993

28. सुकुमार, बावा हाथेक रतन, अखिल झारखण्ड खोरठा परिषद्, भेंडरा, बोकारो, 2009

29. 'राज' विश्वनाथ दसौंधी, पुटुस आर परास, बालीडीह खोरठा कमिटी, बालीडीह, बोकारो, 2004

30. राम, डॉ. डीसी, ढरकल लोर, खोरठा भाषा साहित्य संस्कृति अकादमी, रामगढ़, 2008

31. 'राज', विश्वनाथ दसौंधी, पुटुस आर परास, बालीडीह खोरठा कमिटि, बालीडीह, बोकारो, 2004

32. 'व्यथित', कैलाश महतो, सालूक फूल, अखिल झारखण्ड खोरठा परिषद्, भेंडरा, बोकारो, 2006

खोरठा पत्र-पत्रिकाएँ

पत्रिकाएँ	**संपादक**	**प्रकाश**
इंजोर	धनंजय प्रसाद	मधुपुर, देवघर, 1997, देवघर, 1998–99
करील	बी.एन.ओहदार	ओरमांझी, राँची, 2009
खोरठा	श्रीनिवास पानुरी	बरवाअड्डा, धनबाद, 1970
तितकी	विश्वनाथ दसौंधी 'राज'	कतरासगढ़, धनबाद, 1977–78
तितकी	ए.के.झा	ढांकी क्षेत्र खोरठा कमिटी, रामगढ़
धरतीथान	शिवनंदन पांडेय	'गरीब', गिरीडीह
परास फूल	महेन्द्र प्रबुद्ध	धनबाद, 2009
मातृभाषा	श्रीनिवास पानुरी	बरवाअड्डा, धनबाद, 1957
लुआठी	गिरिधारी गोस्वामी 'आकाशखूँटी'	बालीडीह, बोकारो, 1999
सहिदान	फाल्गुनी मरीक कुशवाहा	गिरीडीह, 2002
सहिया	अनिल कुमार 'विस्थापित'	बोकारो, 2002